रिकॉर्ड:- सुखड़ा देख ले प्राणी.... ओम शान्ति प्रातःक्लास 21-4-67

रूहानी बच्चों को समझाया गया है कि प्राणी आत्मा को कहते है। अब बाप आत्माओं को समझाते हैं यह गीत तो है भक्तिमार्ग का। धीरे-2 यह बजाना भी बन्द हो जावेगा। इनकी दरकार नहीहै। यह तो सिर्फ इनका सार समझाया जाता है। अभी तुम यहाँ जब बैठते हो तो अपने को आत्मा समझो। देह का भान छोड़ देना है। हम आत्मा बहुत छोटी बिन्दी हूँ। मै ही इस शरीर द्वारा पार्ट बजाता हूँ। यह आत्मा का ज्ञान कोई को है नही। बाप बैठ समझाते है अपने को आत्मा समझ मुझ बाप की याद मे बैठना है। यह नालेज बाप ही कल्प-2 भारत मे आकर देते है। अपने को हमेशा समझो कि मै छोटी आत्मा हूँ। आत्मा ही सारा पार्ट बजाती है। इस शरीर से तो सारा देहभान निकल जावे। इसमें ही सारी मेहनत है। हम आत्मा यह 84जन्मों का पार्ट बजाती हूँ। हम सारे इस नाटक के एक्टर्स है। ऊंच ते ऊंच एक्टर है परमपिता परमात्मा। बुद्धि मे रहता है कि वो भी इतनी छोटी बिन्दी है। उनकी महिमा कितनी भारी है वो भी ज्ञान का सागर है सुख का सागर है.... परन्तु है कितनी छोटी बिन्दी। हम आत्मा भी छोटी बिन्दी है। आत्मा को सिवाय दिव्य दृष्टी के देखा नही जा सकता। यह नई पुआईन्टस तुम अभी सुन रहे हो। दुनियाँ क्या जाने। तुम्हारे मे भी थोड़े है जो यथार्थ रीती जानते है। और यह बुद्धि मे रहता है कि आत्मा छोटी बिन्दी है। हमारा बाप इस ड्रामा का मुख्य एक्टर है। ऊंच ते ऊंच एक्टर बाप है। इन सब के आक्यूपेशन का भी तुमको पता है। बाप ज्ञान का सागर है। परन्तु शरीर के बिना तो ज्ञान दे नही सकते है नाँ। शरीर द्वारा ही बाप बोल सकते है। शरीर द्वारा ही बोल सकते है। अशरीरी होने से आर्गन्स अलग होजाते है। भक्ति मार्ग मे तुम देहधारियों का ही सिमरण करते हो। परमपिता परमात्मा का नाम रूप देश काल ही नही जानते है। बस कह देते है परमात्मा नाम रूप से न्यारा है। बाप कहते है ड्रामा अनुसार तुम ही जो नम्बरवन मे थे। तुमको ही फिर तमोप्रधान जरूर बनना है। तो यह अवस्था अपनी मजबूत रखनी है कि हम आत्मा है। हम इस शरीर द्वारा बात करती हूँ। इनमे ज्ञान है। यह ज्ञान और कोई की बुद्धि मे नही कि हमारी आत्मा मे 84जन्मों का पार्ट अविनाशी नूँधा हुआ है। आत्मा एक शरीर छोड़ कर दूसरा लेकर पार्ट बजाती है। यह बहुत-2 नई पुआइन्टस है। एकान्त मे बैठ कर अपने साथ ऐसी-2 बाते करो कि मै आत्मा हूँ, बाप से सुन रहा हूँ। धारन मुझ आत्मा मे होती है। मुझ आत्मा मे ही पार्ट भरा हुआ है। मै आत्मा अविनाशी हूँ। यह अन्दर मे घूमना चाहिये। हमको तमोप्रधान से अब सतोप्रधान बनना है। साधु सन्त आद सब भक्ति मार्ग के देह-अभिमानी है। उनको यह आत्मा का भी ज्ञान नही है। कितने बड़े-2 किताब अपने पास रखते है। अंहकार कितना है। कितने बड़े टाईटल्स मिलते है। है ही क्या, फकीर। उनके फिर पाँव बैठ कर धोते है। अन्धश्रद्धा है नाँ। वास्तव मे कोई भी मनुष्य महात्मा हो नही सकते। यह है ही तमोप्रधान दुनियाँ। ऊंच ते ऊंच आत्मा भी अभी पार्ट धारी है। इस समय तो सब मनुष्य मात्र तमोप्रधान है। आजकल जो भक्ति जास्ती करते है। शास्त्र आद बहुत पढ़ते है उनका ही मान है। क्यों कि भक्ति का राज्य है। अभी तुम जानते हो भक्ति मार्ग अब खत्म होना है। ज्ञान तो सिर्फ तुम बच्चों को ही मिलता है। भक्ति मार्ग कितना बड़ा है। सब भक्ति ही भक्ति है। अभी तो भक्ति से तो जैसे कि बांस आती है क्योंकि भक्ति दुर्गति है नाँ। तो दुर्गति को पाये

****

हुये से बांस आती है। मुख्य बात तो अब तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने का पुरुषार्थ करना है। इस बात को अन्दर मे घोटना चाहिये। ज्ञान सुनाने वाले ही लखपती तो बहुत ही है। परन्तु याद है नही। अन्दर मे अन्तरमुखता रहनी चाहिये। हमको तो बाप की याद से पतित से पावन बनना है। सिर्फ पण्डित नही बनना है। इस पर एक पण्डित का मिसाल भी है नाँ कि माईयों को कहता था कि राम नाम जपने से सागर से पार हो जावेंगी.... तो ऐसे लापकी नही बनना है। ऐसे तो बहुत है। समझानी बहुत अच्छी है परन्तु योग तो है नही। सारा दिन वे देह अभिमान मे रहते है। नही तो बाबा को

वावा को चीट भेजना चाहिये। हम इस समय उठता हूं, ऐसा याद करता हूं, कुछ भी समाचार नही भेजें है। ज्ञान की वहुत लावार है। योग में लावारी है नही। भल वडों-2 को ज्ञान देते है परन्तु योग में वहुत कच्चे है। सवेरे उठना है वाप को याद करना है। वावा आप कितने स्वीट विलवेड हो। कितना यह विचित्र विचीत्र ड्रामा वना हुआ है। कोई भी यह राज नही जानते। भक्ति मार्ग में कितना तूफान है। परन्तु नां आत्मा को ही नां परमात्मा को ही जानते है। इस समय मनुष्य जनावरो से भी वदतर है। हम भी ऐसे ही थे। माया के राज्य में कितनी दुर्दशा हो जाती है। एक दम लम्पट हो जाते है। अभी तुम ही तमोप्रधान वने हो। यह ज्ञान तुम कोई को भी दे सकते हो। वोलो तुम आत्मा हो। आत्मा तमोप्रधान है। इसने सतोप्रधान वनना है। पहले तो अपने को आत्मा समझो। गरीवों के लिये तो और ही सहज है। शाहुकारों को तो झंझट वहुत रहते है। वाप कहते है मै आता भी हूं साधारन के तन में। नां वहुत गरीव नां वहुत शाहुकार। अभी तुम समझते हो कि कल्प-2 वाप आकर हमको यह शिक्षा देते है कि पावन कैसे वनो। वाकी वावा कोई तुम्हारे धन्धे आद में खिटपिट है यह है वो है इसके लिये नही आये है। तुम तो वुलाते ही हो है पतित पावन आओ। तो पावन वनने की युक्ति वताता हूं। यह वेद भी कुछ नही जानते थे। रचेयतर होकर और ड्रामा की आद मध्य अन्त को नही जाने जो जनावर हो गये नां। वावा ने कहा था यह पुआईन्टस तो जरूर लिखो आत्माये इस भृकुटी चक्र में रहती है। यह भी कोई जानते थोड़े ही है। भल कह देते है आत्मा मूल वतन में निवास करती है। परन्तु अनुभव से नही कहते है। तुम तो अभी प्रैक्टीकल में जानते हो। हम आत्मा मूल वतन की रहवासी हूं। हम आत्मा वहुत छोटी है। और आत्मा अविनाशी है यह तो वुधी में याद रहना चाहिये नां। वहतो का योग विलकुल ही है नहीं। देहअभिमान के कारन फिर गलतियां भी वहुत होती है। मूल वात है ही देहीअभिमानी वनना। सवेरे उठ कर यह मनन करो तो दिन में भी वा ही याद रहे। हमको तमोप्रधान से सतोप्रधाम जरूर वनना है। वस यही तात लगी रहे। हमारे मुख से कोई पत्थर तो नही निकलता। कोई भूल हो जावे तो झट रिपोर्ट कर देनी चाहिये कि वावा हमसे यह भूल हो गई है। छुपाने से वो और ही वृधी हो जाती है। वावा को समाचार देते रहो। वावा लिख देंगे तुम्हारा योग ठीक नही है। पावन वनने की वि मुख्य वात है। तुम वच्चों की वुधी में 84 जन्मों की कहानी है। जितना हो सके वस यही चिनतन लगा रहे कि हम सतोप्रधान वन जावें। देह अभिमान को छोड़ना है। तुम हो राज-ऋषी। हठ योगी कव राज योगी सिखा नही सकते है। राज योग वाप ही सिखाते है। ज्ञान भी वाप ही देते है। वाकी इस समय है तमोप्रधान भक्ति। ज्ञान सिर्फ वाप वि संगम पर आकर सुनाते है। वाप आते है तो भक्ति खत्म हो जाती है। यह दुनियां की खत्म होनी है। ज्ञान और राजयोग से सतयुग की स्थापना होती है। भक्ति चीज ही अलग है। मनुष्य फिर कह देते है दुःख और सुख सव यहां ही है। अव तुम वच्चों पर वहुत जिम्मेवारी है। अपना कल्याण करने की युक्ति रचते रहो। यह भी समझाया है कि पावन दुनियां है शान्ति धाम और सुख धाम। यह है अशान्ति धाम और दुःख धाम। यह भी किसको पता नही है। पहले-2 मुख्य वात है ही योग की। योग नही है तो सिर्फ ज्ञान की लावार है सिर्फ पण्डितों मुआफिक। आजकल तो रिधी सिधी भी वहुत निकली है। इनसे ज्ञान का कनैक्शन नही है। मनुष्य कितना झूट में फंसे हुये है। अभी सच्चा वाप आया है। तो भी मनुष्य कहते है अगर भगवान है तो यह करके दिखावे। मरवी को जिन्दा करके दिखावे। यह तो अपने को भगवान कहते ही नही है। यह तो पतित ब्रह्मा है। वाप खुद कहते है कि मै पतित दुनियां पतित शरीर में आता हूं। पावन तो कोई यहां इस शरीर में हो नही सकते है। सन्यासी तो और ही पतित है जो परमात्मा को सर्वव्यापी कह देते है। जिधर देखो परमात्मा ही परमात्मा है। तो पापात्मा ठहरे नां। यह तो अपने को भगवान कहते नही है। यह तो कहते है मै भी पतित हूं। पावन होंगे तो फरिशता वन जावेंगे।

तुम भी पवित्र फरिश्ता बन जावेंगे। तो मूल बात ही है कि हम पवन कैसे बने? याद बहुत जरूरी है। बहुत है जो समझते है कि हम तो शिव बाबा के ही है। याद है ही। यह सब गपोड़े है। इसमें तो पुरूषार्थ करना है। सवेरे उठ कर अपने को आत्मा समझ बैठ जाना है। रूह रिहान करनी है। आत्मा ही बात चीत करती है ना। अभी तुम देहीअभिमानी बनते हो। जो कोई का कल्याण करते है तो उनकी महिमा कीजाती है। वो होती है कि देहअभिमान की महिमा। यह तो है निराकार परमपिता परमात्मा की महिमा। तुम ही समझते हैं। शास्त्रों आद में तो नम्बरवन झूठ है। व्यास जिनको भगवान कहते है उसने क्या-2 बैठ गपोड़े मारे है। भक्ति मार्ग है ही दुर्गति मार्ग। दुर्गति को पाने के लिये भी तो कोई रस्ता होना चाहिये ना। इससे सीढ़ी नीचे ही उतरनी है। यह सीढ़ी और कोई की बुधी में थोड़ेई होगी। हम 84जन्म कैसे लेते है। नीचे ही उतरते आते है। अब तो पाप का घड़ा भर गया है साफ कैसे हो। इसलिये बाप को बुलाते है। तुम हो पाण्डव सम्प्रदाय। तुम रिलीजो भी हो तो पौलिटीकल भी हो। सब रिलीजन की बात समझाते है। दुसरा कोई समझा नही सकते। बाकी वो धर्म स्थापन करने वाले क्या करते=है करते है उनके पिछाडी कोओरों को आना पड़ता है। बाकी वो कोई मोक्ष थोड़ेई देते है। बाप ही पिछाडी में आकर सबको पवित्र बना कर ले जाते है। इसलिये ही उस एक के सिवाय और कोई की महिमा है नही। उनकी वा तुम्हारी कोई महिमा नही है। बाबा ना आता तो तुम भी क्या करते। अभी बाप तुमको चढ़ती कला में ले जाते है। गाते भी है सर्व का भला। परन्तु अर्थ थोड़ेई समझते है। महिमा तो बहुत करते है। जैसे कहते है ना अकाल तख्त पर बैठा है जहां पुलिस पहुंच नही सकती। अब बाप ने समझाया है अकाल तो आत्मा है। उनका यह तख्त है। आत्मा अविनाशी है। काल कब खाता नही। आत्मा को एक शरीर छोड़ कर जाकर दुसरा लेना है। बाकी लेने केलिये कोई आते थोड़ेई है। वो सब है बकवाद। तुमको कोई का भी दुःख नही है। शरीर छोड़ा गया दुसरा पार्ट बजाने। रोने की क्या दरकार है। हम आत्मायें भाई-2 है यह भी तुम जानते हो। गाते है आत्मा परमात्मा.... बाप कहां आकर मिलते है यह कोई को पता थोड़ेई है। अभी तुमको हर बात की समझानी मिलती है। तब से सुनते ही आते हो। कोई किताब आद थोड़ेई उठाते है। सिर्फ रिफर करते है समझाने के लिये। गीता है नम्बरवन माई-बाप। वो झूठी तो बाकी सारी रचना ही झूठी हो जाती। रावण की रचना सारी झूठी ही झूठी। बाप सच्चा है तो सच्ची रचना रचते है। सच बताते है। सच से जीत झूठ से हार। सच्चा बाप सच खण्ड की स्थापना करते है। रावण से तुमने बहुत हार खाई है। यह भी खेल बना हुआ है। अभी तुम जानते हो हमारा राज्य स्थापन हो रहा है। फिर भी सब होंगा नही। यह तो सब पीछे आये है। यह सृष्टीचक्र बुधी में रखना कितना सहज है। सिर्फ इसी में ही खुश नही होना है कि हम ज्ञान बहुत अच्छा देते है। साथ-2 में योग और मैनर्स भी चाहिये। बहुत मीठा बनना है। कोई को दुःख ना देना है। प्यार से समझाना चाहिये पवित्रता पर भी कितना हंगामा होता है। वो भी ड्रामा अनुसार ही होता है। यह बना बनाया ड्रामा है ना। ऐसे नही कि ड्रामा में होगा तो मिलेगा। नही। मेहनत करनी है। देवताओं मिसल दैवी गुण धारण करने है। बहुत मीठा बनना है। देखना चाहिये हम उल्टी चलन चल कर बाप की इज्जत तो नही गंवाते है? सतगुरू का निन्दक ठौर ना पावे मगर यह तो बाप टीचर भी है। आत्मा को अब स्मृती रहती है बाबा ज्ञान का सागर है सुख का सागर है। जरूर ज्ञान देकर गया है तब तो गायन होता है ना। इनकी आत्मा में कोई ज्ञान था क्या। आत्मा क्या है यह भी किसको पता नही है। इस ड्रामा को कोई भी नही जानते है। जानना तो मनुष्यों को ही है ना। बाप ने समझाया है कि कैसे पहले अव्यभचारी फिर व्यभचारी भक्ति चालु होती है। अभी तो पांच भूतों की भी पुजा करते रहते है। रुद्र यज्ञ रचते है तो आत्मा की पुजा करते है×××××××××××वा दैवी शरीरो की पुजा अच्छी? जरूर आत्मा की ही पुजा अच्छी

पुजा अच्छी कहेंगे नां। यह शरीर तो पांच तत्वो का बना हुआ है। इसलिये एक शिव बाबा की पुजा वे अवयभचारी पुजा है। अब उस एक से ही सुनना है। इस लिये कहा जाता है हेयर नां ईवल....भक्ति मार्ग की कोई बात नही सुनो। वो सब है दुगति मुक्त एक से ही सुनो। यह है अव्यभचारी ज्ञान। भक्ति मार्ग के शास्त्रों का भी धमण्ड कितना है। कितने टाईटल मिल मिलते है। संस्कृत भाषा तो इन साधु सन्यासियों ने ही बैठ सुनाई है निकाली है। जब मदर लैंगवेज हिनदी है तो उसका ही जास्ती मान होना चाहिये नां। वो फिर समझते है कि दैवी देवताओं की संस्कृत भाषा थी। वहां तो ऐसी भाषा होती ही नही है। यथा राजा रानी तथा लैंगवेज होती है। सतयुग की भाषा अपनी, त्रेता की भाषा अपनी ही होगी। आगे चल कर यह भी पता पड़ सकता है कि त्रेता मे कोनसी भाषा होती है। मुख्य बात तो देह अभिमान ही टुटेगा तब ही शीतल बनेंगे। बाप की याद में रहेंगे तो मुख से कब उल्टा सुल्टा नही बोलेंगे। कुदृष्टी नही जावेगी। देखते हुये भी जैसे कि देखते नही हो। हमारा ज्ञान का तीसरा नेत्र खुला हुआ है। बाप ने आकर त्रिनेत्री त्रिकाल दर्शी बनाया है। अभी तुमको तीनो कालो तीनो लोको का ज्ञान है।

13-4-67:-प्रातः की रही हुई बाकी पुआईन्टः-आखरीन एक दिन सन्यासी भी आवेंगे। अभी तो उनकी
* *****************************

राजाई है। इनके पावों पर पड़ते है। अंगुठा पानी मे धोकर पीते है। पुजते है। बाप कहते है यह भूत पुजा है। मैं तो पैर है नही। इसलिये पुजने भी नही देंगे। मैने तो यह तन लोन लिया है। इसलिये इसको भाग्यशाली रथ भी कहा जाता है। इस समय तो बहुत सौभाग्यशाली हो। क्योंकि तुम यहां ईश्वरिय सन्तान हो। गायन भी है आत्मा परमात्मा अलग....तो जो बहुत काल से अलग रहते है वो ही आते है। उनको वे आकर पढ़ाता है। कृष्ण के लिये थोड़ेही कह सकेंगे। वो तो पूरे 84जन्म लेते है। यह है उनका अन्तिमजन्म। इसलिये नाम भी उस एक का ही श्याम सुन्दर पड़ा है। राम को भी काला दिखाते है फिर उनको भी क्यो नही श्याम सुन्दर कहते। शिव बाबा का तो किसको पता भी नही है कि क्या चीज है। यह बाप ही आकर समझाते है कि मैं हूं परमपिता परमात्मा। परमधाम मे रहने वाला हूं। तुम भी वहां के ही रहने वाले हो। मैं सुप्रीम पतित पावन हूं। मुझे ही पतित पावन कह कर बुलाते हो। अभी इन सब बातों को तुम समझ रहे हो। बन्दर बुधी से हम ईश्वरिय बुधी बन रहे है। ईश्वर की बुधी मे जो ज्ञान है वो तुमको सुना रहे है। भक्ति मार्ग पुरा हुआ। यह ज्ञान तुमको सिर्फ संगम पर ही मिलता है। भक्ति आधा कल्प चलती है। भक्ति है रात-ज्ञान है दिन। भक्ति मे ज्ञान हो नही सकता। ज्ञान देने वाला सिर्फ एक ही बाप है। यह ज्ञान कोई शास्त्रों मे नही है। उनमें तो है दण्ड कथाये। परन्तु कोई को भी सीधा कहो तो बिगड़ पड़ेंगे। आजकल तो किसीको पत्थर मारने मे भी देरी नही करते है। पुलिस भी देखो गवर्मेन्ट साथ ही पिकेटिंग करने लग पड़ती है। फिर उनको भी जेल मे ड़ाल देते है। वो खुद औरों को जेल मे ले जाते है। अभी खुद जेल मे जाते रहते है। वण्डर है नां।

17-4-67:-कोई-2 को पवित्र बनते ही नही है। बाप का कहना मानते ही नही है। क्योंकि पहचान नही भगवान को भी नही मानते है कुछ समय पवित्र रह कर फिर गिर पड़ते है। जो बाप की याद मे रहेंगे वो ही ऊंच पद पावेंगे। बाकी तो प्रजा में चले जावेंगे। यहां पर तुम आये हो राजा रानी बनने। पढ़ते नही है तो प्रजा बन जाते है। यह दैवी राजधानी स्थापन होती है। इस संगम को ही पुरुषोतम संगम युग कहा जाता है। बाकी सब है कलियुग। तुम हो पुरुषोतम संगम युग मे। मनुष्य तो घोर अन्धेरे मे है नां। फिर जब शरीर को आग लगेगी तो सब जागेंगे। फिर तो पीछे कुछ कर नही सकेंगे। दुलैट हो जाते है। कहीं-2 तो नये भी पुरानो से तीखे चले जाते है। क्यों कि दैरी से आने कारण और ही मुख्य पुआईन्टस मिलने पर तीखे हो जाते है। मुख्य है ही बाप की याद। याद की ही यात्रा है। एक दो से पूछना होता है शिव बाबा को याद करते हो? नही तो याद दिलानी होती है। याद से ही वर्सा मिलेगा। और